कल्याणराय जी मंदिर में शंकर भगवान की प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

शिव संस्कृति का आधार हैं, शिव सृष्टि का आरंभ हैं और शिव ही सृष्टि का अन्त हैं, शिव ही जीवन हैं और जीवन से परे जो कुछ है , वो भी शिव ही हैं।

भगवान शिव से हम सभी बहुत कुछ सीख सकते हैं, वे अपने लिए कठोर व दूसरों के लिए उदार हैं । यह अध्यात्म सबके लिए आदर्श सूत्र है - स्वयं न्यूनतम साधनों से काम चलाते रहना और दूसरों को बहुमूल्य वरदान देना, स्वयं न्यूनतम में भी मस्त रहना, यही शिवत्व है।

भगवान शिव तो देवों के देव हैं। इसलिए उन्हें हम महादेव भी कहते हैं। भगवान शिव व्यक्ति की चेतना के स्वरूप हैं। गले में नाग देवता और हाथों में डमरू और त्रिशूल लिए हुए भगवान शिव हमें जीवन में अभय होने यानी साहसी बनने की प्रेरणा देते हैं।

कैलाश वासी भगवान शिव हमें जीवन में यह भी संदेश देते हैं कि हम हर प्रकार के मोह – लालच से दूर रहें तथा एक संतुलित और आदर्शों से परिपूर्ण जीवन जिए।

भगवान शिव में अनेक गुणों का संगम है। वह महाकाल, रुद्र, विनाशक होने के साथ-साथ भोलेनाथ और शंकर भी हैं जो दूसरों के खुशी के लिए अपने सुख का त्याग करने के लिए तत्पर रहते हैं।

हमारी पौराणिक कथाओं में बताया गया है कि भगीरथ अपने पूर्वजों के उद्धार के लिए गंगा नदी को धरती पर लाये थे। भगीरथ के ऐसा करने पर भगवान शिव ने गंगा नदी के वेग को कम करने के लिए वेगमयी गंगा को अपने घनी जटाओं में बांध कर धरती की रक्षा की।

भगवान शिव सृष्टि की उत्पत्ति के भी देव हैं, और संहार के अधिपति भी शिव ही हैं। लय एवं प्रलय दोनों को अपने अधीन किए हुए भगवान शिव जीव मात्र के लिए कल्याणकारी हैं। लोक कल्याण के लिए ही भगवान शिव ने समुद्र मंथन से निकला विष (हलाहल) पिया और वे नीलकंठ महादेव कहलाए।

भगवान शिव भारतीय संस्कृति के अग्रणी देव हैं। भारत की संस्कृति में जहाँ बहुत विविधता है। अलग अलग परंपरा है। सभी संस्कृति और परंपराओं को भगवान शिव से

प्रेरणा मिलती है। शिव को कोई किस रूप में पूजता है, कोई किस स्वरूप में आराधना करता है। सभी की शिव के प्रति अपनी श्रद्धा है, सभी का भगवान शिव के लिए अपना विशेष भाव है।

भगवान शिव और माता पार्वती, अपने आप में एकजुटता यानि एकत्व का संदेश देते है। और देखिए कि एकत्व का यह संदेश आगे खुद को कैसे अभिव्यक्त करता है - भगवान शिव के गले में सांप लिपटा है। भगवान गणेश का वाहन चूहा है। हम सब सांप और चूहे के रूखे संबंध से भलीभांति परिचित हैं। फिर भी ये एक साथ रहते हैं। इसी तरह, कार्तिकेय का वाहन मोर है। मोर और सांप के बीच दुश्मनी मानी जानी है। फिर भी ये साथ रहते हैं। भगवान शिव के परिवार में विविधता होते हुए भी इसमें सद्भाव और एकता की भावना है। विविधता हमारे लिए टकराव की वजह नहीं है। हम इसे स्वीकार करते हैं, और पूरे दिल से अपनाते हैं।

यह हमारी संस्कृति की विशेषता है कि जहां कहीं कोई देवी या देवता हैं, उनके साथ कोई पशु, पक्षी अथवा पेड़ जुड़ा होता है। हम उस पशु-पक्षी अथवा पेड़ की पूजा उसी भावना से करते हैं, जिस तरह देवी-देवता की पूजा की जाती है। प्रकृति के लिए सम्मान की भावना मन में बैठाने का इससे बेहतर जरिया नहीं हो सकता। हमारे पूर्वजों ने हमें यह बताया कि प्रकृति ईश्वर के समान है। हम बचपन से इन्हीं गुणों के साथ जीते आए हैं और यही वजह है कि करुणा, उदारता, भाईचारा और सद्भाव की भावनाएं हमारे अंदर कुदरती तौर पर होती हैं। इन्हीं गुणों ने भारतीय सभ्यता को सदियों से जीवंत रखा है।

भगवान शिव और राम को पूजने वाली भारतीय संस्कृति ने संसार को अध्यात्म और आत्म विकास की महान सीख दी है। हमारी संस्कृति योग और ध्यान के माध्यम से व्यक्ति को आध्यात्मिक जीवन में उन्नति तथा आत्म विकास की सीख देती है।

हम भगवान शिव को भी जब देखते हैं तो ध्यान मुद्रा में देखते हैं। भगवान बुद्ध और भगवान महावीर को भी हम ध्यान में पाते हैं। आज यहाँ उपस्थित सभी जनों और युवाओं से मेरा विशेष आग्रह है कि आत्मिक विकास और निजी उन्नति के लिए भारत की प्राचीन परंपरा योग और ध्यान का अभ्यास करें।

हमारे देश ने दुनिया को वसुधैव कुटुम्बकम की धारणा दी है। यह हमारी संस्कृति रही है कि हमने सम्पूर्ण पृथ्वी को ही अपना परिवार माना है। इस वैश्विक परिवार में आज पूरी दुनिया मान रही है कि भारत अग्रणी भूमिका में है। ऐसे में हमारे नागरिकों व हमारे नौजवानों का दायित्व बढ़ जाता है।

हम दुनिया को क्या नया दे सकते हैं, क्या सीख आज के समय में दे सकते हैं, इस पर जब हम विचार करते हैं तब मैं सोचता हूँ कि भारत दुनिया को अध्यात्म विज्ञान का उपहार दे सकता है। हम दुनिया को सामूहिकता के साथ कार्य करने की संस्कृति दे सकते हैं।

कोरोना के समय में हमने देखा है कि कैसे दुनिया के बड़े-बड़े विकसित देशों ने हिम्मत खो दी थी। भारत ने उस विपरीत समय में सम्पूर्ण विश्व का मार्गदर्शन किया।

हमने दुनिया को एकजुटता और सामूहिकता का संदेश दिया है। अहिंसा, शांति, सद्भाव और एकता के मूल्य दुनिया हमसे सीखती है। लोकतंत्र, वैचारिक दर्शन और विज्ञान में हमने सदैव विश्व को रास्ता दिखाया है। मैं समझता हूँ कि भविष्य में भी हम दुनिया को दिशा देंगे।

इस विज़न के साथ हमारे होनहार युवाओं को सामाजिक-सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक सोच पर काम करना होगा।

युवा प्रत्येक देश की सबसे मूल्यवान संपत्ति होते हैं और हम तो इस मामले में बहुत सौभाग्यशाली हैं। भारत विश्व के सबसे युवा देशों में शामिल है। हमारी 65 प्रतिशत जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु की है। हमारे युवाओं और मानव संसाधन का अनुकूलतम उपयोग होता है तो भारत विश्व में नेतृत्वकारी भूमिका में होगा इसमें कोई दो राय नहीं है।

इस वर्ष हमारे देश ने अपनी आज़ादी के 75 वर्ष पूरे किए हैं। इन 75 वर्षों के दौरान हमने जो तरक्की की है, उसे हमने अमृत महोत्सव के रूप में मनाया है। इसके साथ ही मैं समझता हूँ कि यह अवसर हमारे लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि हम किस तरह अपने राष्ट्र की उन्नति में भागीदार बन सकते हैं, हम किस तरह अपने देश की उपलब्धियों में अपना योगदान दे सकते हैं, इसके बारे में हम और अधिक विचार करें।

आने वाले 25 वर्षों बाद भारत जब अपनी आज़ादी की 100वीं वर्षगाँठ मनाएं, तो उसमें हमारे कार्यों की भूमिका हो, उसमें हमारा योगदान हो, हमें इस दिशा में आगे बढ़ना है।

जब हम कहते हैं कि 21वीं सदी दुनिया में भारत की सदी होगी, जब हम कहते हैं कि भारत दुनिया का नेतृत्व करेगा; तब हमारा उद्देश्य एक ऐसे भारत का निर्माण करना है; जिसमें हर नागरिक स्वस्थ हो, युवा स्वावलंबी हो, महिलाएं आत्मनिर्भर हो, हर बालक और

बालिका शिक्षित हो, किसान और श्रमिक खुशहाल हो। एक ऐसा भारत जहाँ समावेशी समृद्धि हो, समावेशी संपन्नता हो।

हमारे सपनों के ऐसे स्वर्णिम भारत का निर्माण तभी हो सकता है जब देश का हर एक वर्ग, हर एक व्यक्ति पूरी निष्ठा के साथ आगे बढ़ने का सामूहिक प्रयास करे। राष्ट्र नव निर्माण के इस महायज्ञ में प्रत्येक संस्था, प्रत्येक नागरिक को अपने राष्ट्रीय दायित्वों और कर्तव्यों का निर्वहन करना है। भगवान शिव के आशीर्वाद और भगवान राम के जीवन संदेशों से सीखकर हम विकसित भारत के निर्माण का कार्य कर सकते हैं।

आप सभी पर भगवान शिव का आशीर्वाद सदैव रहे, सबका कल्याण हो। मैं भगवान शिव से यही प्रार्थना करता हूँ।

आप सभी को बहुत बहुत शुभकामनाएं। ॐ नमः शिवाय।